फिराक गोरखपुरी ⑨

जन्म : फिराक गोरखपुरी का जन्म 28 अगस्त, सन् 1896 को गोरखपुर में हुआ था। इनका मूल नाम रघुपति सहाय 'फिराक' है।

शिक्षा : इन्होंने रामकृष्ण की कहानियों से शुरुआत करके बाद में अरबी, फारसी और अंग्रेजी में शिक्षा प्राप्त की। 1917 में ये डिप्टी कलेक्टर के पद पर चयनित हुए, लेकिन स्वराज आंदोलन के लिए 1918 में पद-त्याग दिया। 1920 में स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेने के कारण इन्हें डेढ़ वर्ष की जेल हो गई। वे कुछ समय तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में अध्यापक रहे।

सम्मान : इन्हें गुले-नग्मा के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार और सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है।

महत्त्वपूर्ण रचनाएँ : गुले-नग्मा, बज्मे जिंदगी : रंगे-शायरी, उर्दू गजलगोई इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

निधन : इनका देहांत सन् 1983 में हुआ।

भाषा शैली – फिराक गोरखपुरी ने अपनी रचनाओं में परंपरागत भावबोध और शब्द भंडार का प्रयोग किया है। साथ ही उन्होंने नई भाषा और नए विषयों पर भी लिखा है। इनकी भाषा मुहावरेदार और लाक्षणिक है।

2020/8/4 15:07

Scanned with CamScanner

रुबाइयाँ, गजल

Q. शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है?

→ प्रस्तुत कविता में शायर राखी के लच्छों को बिजली की चमक की तरह कहकर भाई-बहन के मधुर संबंध के मधुर संबंध की ओर संकेत करता है। जिस प्रकार बादलों में बिजली की चमक विद्यमान होती है, वैसे ही बहन के दिल में भी भाई के प्रति हमेशा मीठे प्रेम की मिठास रहती है। भाई बहन का बंधन पवित्र और अटूट है।

Q. खुद का परदा खोलने से क्या आशय है?

→ खुद का परदा खोलने से आशय है – दूसरों की निंदा कर स्वयं के दोषों को बताना। जिस व्यक्ति का जैसा नजरिया होगा, उसे सभी व्यक्ति वैसे ही दिखाई देते हैं। बुरे व्यक्ति को सभी बुरे ही दिखाई देते हैं। हमें दूसरों के अवगुणों को न देखकर उनके गुणों से सीख लेकर स्वयं के गुणों में सुधार करना चाहिए।

Q. किस्मत हमको रो लेवे है हम किस्मत को रो ले हैं – ~~खुद को दोषी न ठहराकर व्यक्ति हमेशा 'भाग्य में'~~ इस पंक्ति में शायर की किस्मत के साथ तना-तनी का रिश्ता अभिव्यक्त हुआ है। चर्चा कीजिए

→ भारतीय समाज की मानसिकता भाग्य को दोष देने की है। खुद को दोषी न ठहराकर व्यक्ति हमेशा 'भाग्य में ऐसा ही लिखा था' कहता रहता है। व्यक्ति को कोई उपलब्धि न मिलने पर इसे किस्मत (भाग्य) में लिखा मानना सही नहीं है क्योंकि व्यक्ति के कर्म ही भाग्य बनाते हैं। मनुष्य को हमेशा पुरुषार्थ करते रहना चाहिए।

Scanned with CamScanner

टिप्पणी करें

(क) गोदी के चाँद और गगन के चाँद का रिश्ता।

→ प्रत्येक माँ को अपना बेटा आकाश के चाँद के समान प्यारा, सुंदर और अनमोल लगता है। जिस प्रकार आसमान का चाँद सभी के दिल को लुभाता है उसी प्रकार एक बच्चा भी अपनी क्रियाओं से सभी का मन मोह लेता है।

(ख) सावन की घटाएँ व रक्षाबंधन का पर्व।

→ सावन की घटाएँ व रक्षा बंधन के पर्व का आपस में गहरा संबंध है। सावन में आसमान में बादलों की काली-काली घटाएँ रहती हैं और उन बादलों में बिजली के लच्छे चमकते रहते हैं। जिस प्रकार सावन का बादलों से और बादलों का बिजली से अभिन्न संबंध है, वैसे ही राखी के धागे में भी बिजली के लच्छों की चमक भाई-बहन के अटूट प्रेम का प्रतीक है। भाई-बहन के मिठास भरे बंधन का प्रतीक यह रक्षाबंधन का पर्व भी है।

2020/8/4 15:07

Scanned with CamScanner